

बुद्ध दर्शन: समकालीन प्रासंगिकता

डॉ० कौशलेन्द्र वर्मा'

असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, डॉ० बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
महू, इंदौर, (म.प्र)

शोध-सार

मानव सभ्यता के इतिहास में दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मानव जीवन के जिज्ञासाओं और समस्याओं के निराकरण करने के प्रयास में दर्शन की विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ और विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ। उन दार्शनिक सिद्धांतों में बौद्ध दर्शन बहुत महत्वपूर्ण रहा है। बौद्ध दर्शन में व्यक्ति के जीवन से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों का निरूपण करना और उन्हें व्यावहारिक रूप देने पर विशेष बल दिया गया है। इसमें सांसारिक जीवन में दुःख की सर्व व्यापकता से सम्बंधित आर्य सत्य और उसके निरोध से सम्बंधित अष्टांगिक मार्ग तथा जीवन का परम उद्देश्य निर्वाण जैसे विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। निस्संदेह बुद्ध का विचार एवं दर्शन अपने आप में महत्वपूर्ण एवं अमूल्य है किन्तु मुझे यह कहने में तनिक भी गुरेज नहीं है कि वास्तविक ज्ञान तो हमें उनके जीवन से ही मिलती है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन के सिद्धांत निःसंदेह सार्वकालिक महत्व के हैं। समकालीन परिदृश्य में बौद्ध दर्शन भारतीय धर्म चिन्तन, दर्शन और संस्कृति में बौद्ध धर्म का अभूतपूर्व योगदान रहा है। जिसने प्रज्ञा और ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न किया। परिणामस्वरूप ज्ञान और दर्शन की दिशा में इस्का प्रभाव विश्व स्तर पर पड़ा और अपनी नवीन चिन्तन पद्धति से सबको आकृष्ट किया। बौद्ध दर्शन के धर्म का आधर आचार है और प्रज्ञा, शील और समाधि बुद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं। शील से काया की शुद्धि, समाधि से चित्त की शुद्धि और प्रज्ञा से अज्ञानता का नाश होता है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन वैज्ञानिक एवं मानवता का धर्म है और वह मनुष्य के दुःख-मुक्ति के सम्यक मार्ग अपनाने का संदेश देता है। भगवान बुद्ध एक ऐसे समाज के वैज्ञानिक थे जिन्होंने पारलौकिक सत्ता ईश्वर एवं आत्मा पर विश्वास न करके मानवीय नैतिक मूल्य, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग को जीवन की उत्कृष्टता पर विशेष बल दिया है। उनके चार आर्य-सत्य एवं अष्टांगिक-मार्ग ने समाज में नई व्यवस्था को प्रोत्साहित किया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की विकट समस्याओं का हल बुद्ध के दर्शन एवं उपदेशों में निहित है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन मानवीय मूल्य एवं दृष्टिकोण को अपनाने की महती आवश्यकता है।

शब्दकुंजी : बौद्ध दर्शन, त्रिरत्न, आर्य-सत्य अष्टांगिक मार्ग, सर्व-व्यापकता, पंचशील, नैतिक आचरण, मानवीय मूल्य

युग बीतते हैं, सृष्टि बदलती हैं और दृष्टि में भी परिवर्तन आता है। कई युग द्रष्टा इस संसार में जन्म लेते हैं, अनेक की सिर्फ स्मृतियां शेष रहती हैं लेकिन कुछ व्यक्तित्व अपनी अमर गाथाओं को चिरस्थाई बना देते हैं। भारत में सामाजिक क्रांति और सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने वाले जिन महापुरुषों का नाम

स्मरण किया जाता है उनमें गौतम बुद्ध का प्रमुख स्थान है। अपने जीवन एवं दर्शन से समस्त मानव जाति को बुद्ध ने एक नई राह दिखाई है। दुनिया को अपने विचार एवं दर्शन से नया मार्ग (मध्यम मार्ग) दिखाने वाले भगवान बुद्ध भारत के एक महान दार्शनिक, समाज सुधारक और बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। महात्मा बुद्ध ने

भारतीय वैदिक परंपरा में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों एवं कर्मकांडों को दूर किया। समकालीन समय में अन्धविश्वास, कर्मकांड एवं जाति-पाति का विरोध करके वैज्ञानिक समाज एवं आंतरिक शुद्धि तथा अहिंसा पर जोर बौद्ध दर्शन का महत्वपूर्ण विचार रहा है। मध्यकाल के संत कबीरदास, 19वीं सदी के महान भारतीय विचारक एवं दार्शनिक महात्मा ज्योतिबा फुले और समाज निर्माता डॉ० बी.आर.आम्बेडकर जैसे क्रांतिकारी महापुरुषों पर महात्मा बुद्ध के विचारों का गहरा प्रभाव दिखता है। डॉ० आम्बेडकर ने बुद्ध धम्म से प्रभावित होकर वर्ष 1956 में अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले बौद्ध धर्म अपना लिया था और तर्कों के आधार पर स्पष्ट किया था कि क्यों उन्हें भगवान बुद्ध शेष धर्म-प्रवर्तकों की तुलना में ज्यादा लोकतांत्रिक नजर आते हैं।

गौतम बुद्ध सामाजिक क्रांति के शिखर पुरुष थे। उनका दर्शन अहिंसा और करुणा का ही दर्शन नहीं है बल्कि क्रांति का दर्शन है। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म अपने विराट रूप में भारत और विश्व में फैला। बुद्ध ने तत्वमिमांसीय प्रश्नों पर ध्यान न देते हुए अपने ज्ञान से समस्त संसार के दुःखी जनता को दुःख से छुटकारा पाने का रास्ता बताया। जनकल्याण ही उनका परम उद्देश्य था। बुद्ध ने दुःख से मुक्ति पाने के लिए अपनी प्रज्ञा और सूक्ष्म विवेक से चार आर्य सत्यों को प्रस्तुत किया। बौद्ध धम्म का महत्वपूर्ण विचार अत्त दीपो भव है अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो। इस विचार का मूल्य है कि व्यक्ति को अपने जीवन में किसी भी नैतिक और अनैतिक प्रश्न का फैसला स्वयं करना चाहिए। बुद्ध का मानव के कल्याण के लिए अंतःशुद्धि का सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है। यह सिद्धांत व्यक्ति को अन्दर से नैतिक होने पर बल देता है।

बौद्ध धर्म ऐसे नैतिक नियमों का संग्रह है जो हमें यथार्थ स्वरूप को पहचान कर अपनी संपूर्ण मानवीय क्षमताओं को विकसित करने में मार्गदर्शन देता है। बौद्ध

दर्शन में परस्पर निर्भरता, सापेक्षता और कारण-कार्य संबंध जैसे विषयों के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी है। इसमें समुच्चय सिद्धांत और तर्क-वितर्क पर आधारित तर्कशास्त्र की एक विस्तृत व्यवस्था है जो हमें अपने चित्त की दोषपूर्ण कल्पनाओं को समझने में सहायता करती है। बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी और अनात्मवादी है अर्थात् इसमें ईश्वर और आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है फिर भी समाज में सामंजस्य स्थापित करने के लिए पुनर्जन्म को स्वीकार किया गया है। बुद्ध ने सांसारिक दुखों से मुक्ति के संबंध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया और मध्यम मार्ग का रास्ता प्रशस्त किए।

बौद्ध धम्म समाज के सतत् विकास में अतुलनीय योगदान दिया है क्योंकि बुद्ध के वैज्ञानिक दर्शन का प्रभाव तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर पड़ा और समाज को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने ऐसे धम्म को प्रचारित किया जो मानवता पर आधारित हो और जिसमें ऊँच-नीच का कोई भेदभाव ना हो तथा हर व्यक्ति का समान रूप से विकास हो। बौद्ध धर्म की मानवतावादी परिकल्पना ने समाज के भेदभाव को दूर कर विश्व शांति एवं परस्पर भाईचारे का वातावरण निर्मित करके सत्य, अहिंसा, कला एवं संस्कृति के विकास के मार्ग को प्रशस्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बुद्ध बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की संकल्पना के माध्यम से मानव जाति के दुखों को समग्र रूप से दूर करना चाहते थे और एक ऐसा मानव समाज हो जहां पर की सब एक-दूसरे को सहयोग करें, दुखों से मुक्ति में सहायक हों। उन्होंने मानवमात्र के दुखों को कम करने के लिए पंचशील और अष्टांगिक मार्ग के नैतिक व कल्याणकारी जीवन दर्शन का प्रतिपादन किया। बुद्ध द्वारा दिए गए सारे उपदेश इन चार आर्य सत्यों में समाहित हो जाते हैं। यह चार आर्य सत्य इस प्रकार हैं-

1. संसार दुःखों से परिपूर्ण है- अर्थात् दुःख।

2. दुःखों का कारण भी है - अर्थात् दुःख - समुदाय।
3. दुःखों का अन्त सम्भव है- अर्थात् दुःख निरोध।
4. दुःखों के अन्त का मार्ग है- अर्थात् दुःख निरोध मार्ग

यह सभी आर्य सत्य बौद्ध धर्म का निचोड़ है। बुद्ध की सारी विचारधारा किसी न किसी रूप में इन चार आर्य सत्यों से प्रभावित रही हैं। इन आर्य सत्यों के सम्बन्ध में 'माज्झिम निकाय' में कहा गया है कि इसी से (चार आर्य सत्यों से) अनासक्ति, वासनाओं का नाश, दुःखों का अन्त, मानसिक शांति, ज्ञान, प्रज्ञा था निर्वाण सम्भव हो सकते हैं।

इसके साथ ही सांसारिक दुखों से मुक्ति के लिए बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग पर चलने की बात कही। आष्टांगिक मार्ग के साधन हैं-

1. सम्यक दृष्टि: चार आर्य सत्य में विश्वास करना।

चार आर्य सत्य में विश्वास करना बुद्ध अविद्या को दुख का मूल कारण मानते हैं। इसके कारण व्यक्ति में मिथ्या दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। इस मिथ्या दृष्टिकोण के कारण अवास्तविक वस्तुओं को वास्तविक समझ लेता है। क्षणिक वस्तुओं को शाश्वत मान लेता है और उनसे ऐसे मोह कर लेता है मानो जीवन पर्यन्त उसको सुख देती रहेंगी।

2. सम्यक संकल्प: मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना।

चित्त से राग द्वेष नहीं करना यह जानना कि राग द्वेष रहित मन एकाग्र हो सकता है। करुणा, मैत्री, मुदिता, सदाचरण करने का संकल्प लेना धम्म पर चलने का संकल्प लेना बुद्ध कहते हैं कि केवल सम्यक दृष्टि ही पर्याप्त नहीं है। सही दृष्टि के साथ सही कर्म भी आवश्यक है। सही या उचित कर्म के लिए उचित संकल्प चाहिए।

3. सम्यक वाक: हानिकारक बातें और झूठ न बोलना।

सत्य एवं मृदु वचन ही सम्यक वाक हैं। जिससे दूसरों को कष्ट पहुंचता हो ऐसे वचनों का त्याग कर

देना चाहिए। आवश्यकता से अधिक और जब तक आवश्यक ना हो तब तक नहीं बोलना चाहिए।

4. सम्यक कर्मान्त : हानिकारक कर्म न करना।

इसके अंतर्गत बुरे कर्मों का परित्याग करना कहते हैं कि जो निर्वाण प्राप्ति की इच्छा रखते हैं उनको अपने कर्मों पर नियंत्रण रखना चाहिए। हिंसा, स्तेय और इंद्रिय भोग बुरे कर्म इनका त्याग करना चाहिए।

5. सम्यक अजिविका: कोई भी स्पष्टतः या अस्पष्टतः हानिकारक व्यापार न करना।

इसका अर्थ उचित कार्य द्वारा ईमानदारी से जीविकोपार्जन करना। चोरी, धोखाधड़ी रिश्वतखोरी आदि अनैतिक कृत्यों द्वारा धन प्राप्ति निषिद्ध है।

6. सम्यक व्यायाम: अपने आप सुधारने की कोशिश करना।

निर्वाण तभी प्राप्त हो सकता है जब मनुष्य अपने में अच्छे विचार लाए और उनको अपने मन में बनाए रखें। पुराने बुरे विचारों को मन से निकालना नए बुरे विचारों को मन में आने से रोकना।

7. सम्यक स्मृति: स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना।

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं, आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग आदि को याद रखना एवं वस्तुओं को वास्तविक स्वरूप में याद रखना ही सम्यक स्मृति है। मनुष्य को याद रखना चाहिए कि संसार में प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षणिक है। वस्तुओं की अनस्वरता को मन में बनाए रखना ही सम्यक स्मृति है।

8. सम्यक समाधि: निर्वाण पाना और स्वयं का गायब होना।

समाधि अष्टांगिक मार्ग का अंतिम एवं सबसे महत्वपूर्ण सोपान है। पूर्व के सात मार्ग मनुष्य को समाधि के योग्य बनाने का साधन मात्र हैं। समाधि निर्माण के सबसे निकट का चरण है। समाधि के चार चरण हैं।

प्रथम अवस्था- आर्य सत्त्यों का तर्क वितर्क पूर्वक मनन चिंतन ।

द्वितीय अवस्था- आर्य सत्य में श्रद्धा सुमन उत्पन्न होता है

तृतीय अवस्था- आनंद के प्रति उपेक्षा का भाव उत्पन्न।

चतुर्थ अवस्था- मन की सभी चित वृत्तियों का निषेध और शांति की प्राप्ति यही निर्वाण है।

दुःख का निरोध इसी अष्टांगिक मार्ग पर चलने से होता है। इस आर्यमार्ग (अष्टांगिक मार्ग) को सिद्ध कर व्यक्ति मुक्त हो जाता है।

इन 8 अंगों (अष्टांगिक मार्ग) को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1. **प्रज्ञा** (सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प)
2. **शील** (सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम)
3. **समाधि** (सम्यक समाधि, सम्यक स्मृति)

आज विश्व में हिंसा और सामाजिक भेदभाव बढ़ रहा है। मनुष्य विचारों से हिंसात्मक होता जा रहा है। आतंकवाद या फिर दो देशों के बीच युद्ध जैसे हालात हैं। ऐसी विकट परिस्थिति में बौद्ध दर्शन कहीं ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। व्यक्ति के विनाशकारी विचारों को बदलना और उन पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। लगभग ढाई हजार साल पहले बुद्ध ने मानवीय प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए कहा था कि मनुष्य का मन ही सारे कर्मों का नियंत्रता है। इसलिए मानव की गलत प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने के लिए उसके मन में सद्विचारों का प्रवाह कर उसे सदमार्ग पर ले जाना जरूरी है। उन्होंने यह सदमार्ग बौद्ध धर्म के रूप में दिया था। अतः आज मानव-मात्र की कुप्रवृत्तियों, जैसे- हिंसा, द्वेष, लोभ आदि से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध

दर्शन को समझने की जरूरत है। बुद्ध का कर्मवादी सिद्धांत वर्तमान विश्व में काफी महत्त्व रखता है। दरअसल आज जिस तरह व्यक्ति भाग्यवाद तथा तरह-तरह के आडंबरों एवं कर्मकाण्डों में जकड़ता जा रहा है, ऐसे में कर्मवादी सिद्धांत उन्हें मानव कल्याण से जोड़कर समाज को तार्किक बनाने में कारगर साबित हो सकता है।

आज पूरी दुनिया हिंसा, धार्मिक उन्माद, नस्लीय टकराव जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रही है। मानव अस्तित्व के लिए बड़े और गंभीर खतरे खड़े हो गए हैं। इंसान ने जहाँ एक तरफ विज्ञान, तकनीकी में विकास और उसके उपयोग से अपार समृद्धि हासिल कर ली है, तो वहीं दूसरी ओर स्वार्थ, लोभ, हिंसा आदि भावनाओं के वशीभूत होकर वह आपसी कलह, लूट-खसोट, अतिक्रमण जैसे अनैतिक मार्ग को भी अपना रहा है। इस कारण दुनिया में भौतिक संपदा के साथ-साथ मानव अस्तित्व को भी बचाना आवश्यक हो गया है। इसलिए आदमी के अनैतिक विचारों में परिवर्तन लाना और उस पर नियंत्रण रखना बहुत आवश्यक है। बुद्ध ने मानवीय प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए कहा था कि मनुष्य का मन और तन ही सभी कर्मों का नियंत्रता है। अतः मानव की गलत प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने के लिए उसके मन में सद्विचारों का प्रवाह कर उसे सदमार्ग पर ले जाना आवश्यक है।

वर्तमान समय में आज भारत सहित विश्व में जो धार्मिक कट्टरवाद व आतंकवाद दिखाई दे रहा है, वह समस्त मानव जाति के लिए बड़ी चिंता और चुनौती है। भारत में सांप्रदायिक दंगों और जातीय-जनसंहारों में बहुत लोगों की जानें गई हैं, वह बहुत ही चिन्तनीय है। अब आवश्यकता इस बात की है कि यदि भारत में वैज्ञानिक धर्म एवं विश्व शान्ति की स्थापना करनी है तो बौद्ध धर्म के आर्य सत्य, करुणा और मैत्री के सिद्धांतों को

अपनाना जरूरी है। अतः इसको केवल बौद्ध धर्म ही पूरा कर सकता है।

बुद्ध के पंचशील सिद्धांत आज समाज और देश-दुनिया के लिए प्रासंगिक हैं। समकालीन परिदृश्य में अशांति, हिंसा, भय और युद्ध का वातावरण, असमानता, गरीबी, मानवीय मूल्यों का ह्रास, चोरी, वैमनस्यता इत्यादि समस्याएँ व्याप्त हैं। ऐसे समय में बुद्ध के जीवन एवं दर्शन को अपने आचरण में लाकर हम शांति-पूर्ण मानवता, नैतिकता और मूल्यों पर आधारित समाज की कल्पना कर सकते हैं और अहिंसा पर आधारित विश्व में शांति, सदभावना और कल्याण की भावना को ओत-प्रोत कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए प्रत्येक जनमानस को बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग और पंचशील के सिद्धांत को आत्मसात करना चाहिए। यह धम्म विश्व का एक ऐसा दर्शन है कि जिसमें सभी धर्मों के लिए दरवाजे खुले हैं तथा बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की भावना से ओत-प्रोत है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की विकट समस्याओं का हल बुद्ध के दर्शन एवं उपदेशों में निहित है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन मानवीय मूल्य एवं दृष्टिकोण को अपनाने की महती आवश्यकता है क्योंकि बुद्ध का दर्शन वैश्विक स्तर पर मानवता के विकास के लिए और स्वयं तथा दूसरे के व्यवहार में मनः परिवर्तन के लिए एक वैश्विक आंदोलन का सन्देश दिया है। बौद्ध



धम्म में अहिंसा, मैत्री करुणा एवं मुदिता ऐसे बौद्ध मूल्य हैं जो सामान्य जन मानस को प्रकाश स्तम्भ की भांति आलोकित कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. समन्त वासादिका : विनयपिटक की टीका, बौद्धघोष, जे.ताकाकुसु और एस.नागी द्वारा सम्पादित,पालि टेक्स्ट,लन्दन,1924-47
2. सुत्त निपात सम्पादक, डी.एण्डरसन और एस. स्मिथ,पालि टेक्स्ट सोसायटी,लन्दन1913 नालंदा देवनागरी संस्करण,1958.
3. उपासक,चन्द्रिका सिंह: डिक्शनरी ऑफ अर्ली बौद्धिस्ट मोनोस्टिकटर्क्स, वाराणसी 1975
4. कोसम्बी,दामोदर धर्मानन्द:दी कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ ऐंशयेन्ट इण्डिया, इन हिस्टारिकल आउट लाइन, भारतीय संस्करण, दिल्ली 1975
5. अंगुत्तर निकाय:सम्पादक भिक्षु जगदीश कश्यप,नालंदा देवनागरी,संस्करण 1958 सम्पादिक रिचर्ड मोरिस और एण्डमण्ड हार्डी,पालि टेक्स्ट सोसायटी लन्दन,1885-1900.
6. कथावस्तु: सम्पादिक भिक्षु जगदीश कश्यप, नालंदा,देवनागरी संस्करण 1961.
7. चुल्लवग्ग: सम्पादक भिक्षु जगदीश कश्यप, नालंदा देवनागरी संस्करण,1956